## केदारनाथजीकी अन्य पुस्तिकायें

| | |
|---|---|
| गृहस्थाश्रमकी दीक्षा | ०.२५ |
| विद्यार्थी-मित्रोंसे | ०.३५ |
| संयम और ब्रह्मचर्य | ०.२५ |
| सच्चे सुखका मार्ग | ०.३० |
| समयका सदुपयोग | ०.३० |

डाकखर्च अलग

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदावाद–१४

## लेखकका निवेदन

'विवेक और साधना' बड़ी पुस्तक है। अुसमें तात्त्विक, धार्मिक, भक्ति तथा योग-सम्बन्धी और सामाजिक आदि अनेक गंभीर तथा सामान्य लोगोंको समझनेमें कठिन मालूम हों अैसे विषय हैं। अुन्हें समझनेके लिअे अुन विषयोंका बहुत पूर्व-अभ्यास आवश्यक है। सबकी अितनी तैयारी नहीं होती। फिर भी जीवनको अुन्नत बनानेवाले सद्वाचनमें अुन्हें रस होता है। अतः बहुत दिनोंसे मेरी यह अिच्छा थी कि अैसे लोगोंको आसानीसे समझमें आ जायं अैसे मूल पुस्तकके कुछ प्रकरणोंकी छोटी पुस्तिकाअें छापी जायं। कुछ मित्रोंने भी अैसी सूचना की थी। यह बात श्री जीवणजीभाजीके सामने रखते ही अुन्होंने अिसे स्वीकार कर लिया, और थोड़े समयमें ही यह काम पूरा कर दिया। अिससे मुझे बड़ा आनन्द होता है।

यह पुस्तिका प्रसिद्ध करनेका मेरा मूल अुद्देश्य पूर्ण करना पाठकोंके हाथमें है। मेरा विश्वास है कि पाठक अिसे पूर्ण करेंगे।

१२-११-'६० केदारनाथ

# अनुक्रमणिका

# सुख-सम्बन्धी धर्म्य विचार

*बालाओ,*

तुमने अिस समय कअी सवाल पूछे हैं। अुनसे यह कल्पना की जा सकती है कि जीवन-सम्बन्धी तुम्हारे विचारोंका प्रवाह किस दिशामें बह रहा है। तुम सब विद्यार्थिनियां हो। कौटुम्बिक और सामाजिक दृष्टिसे तुम्हारा जीवन लड़कों जैसा स्वतंत्र नहीं है। फिर भी तुम्हारे प्रश्नोंसे अैसा दिखाअी देता है कि तुम्हारे खयालसे तुम्हें सब तरहसे स्वतंत्र होना चाहिये। अिसमें संदेह नहीं कि स्वतंत्रता सबको प्यारी है। छोटा बच्चा या मूर्ख आदमी भी स्वतंत्रता चाहता है। अुसे भी नियंत्रण अच्छा नहीं लगता। तुम तो शिक्षा पाकर ज्ञान-सम्पन्न हो रही हो। अिसी तरह शिक्षा पूरी करनेके बाद अर्थ-सम्पादन करनेकी आशा रखती हो। अैसी हालतमें तुम्हें स्वतंत्रताकी अिच्छा हो तो आश्चर्य नहीं; अथवा यह भी नहीं कहा जा सकता कि अिसमें तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओंका अतिरेक है या कोअी अनुचित बात है। परन्तु तुम्हारे सारे विचारों और तुम्हारी आकांक्षाओंमें मुझे यह बड़ा दोष मालूम होता है कि वे सब तुम्हारे अपने ही सुखको ध्यानमें रखकर अुसके आसपास घूम रही हैं। तुम्हारे सारे विचारों और कल्पनाओंमें मुख्यतः यह हेतु जान पड़ता है कि किसी भी तरह खूब रुपया कमाकर मनमाने शरीर-सुख प्राप्त किये जायं। तुम्हारी यह मान्यता अथवा लगभग प्रतीति ही हो गअी दीखती है कि स्त्रियां रुपया नहीं कमा सकतीं अिसलिअे अुन्हें स्वतंत्रता

स्वतंत्रताके लक्षण

नहीं है और स्वतंत्रता न होनेके कारण ही वे आज तक सब तरहके दुःख भोगती रही हैं। तुम्हारी यह समझ न पूरी तरह सही है और न पूरी तरह गलत ही। तुम्हें सम्पूर्ण जीवन-सम्बन्धी अधिक अुचित और विशाल दृष्टिसे विचार करना सूझे और तुम वैसा कर सको, तो संभव है कि जीवनके विषयमें जो दृष्टि रखकर आज तुमने अपने सुखका विचार किया है और अुसके बारेमें जो व्याख्यायें और कल्पनायें की हैं वे बिलकुल बदल जायं। आज तुम जो शिक्षा पा रही हो, अुसमें मानव-जीवनके लिअे जरूरी कितनी विद्याओं और कलाओंका समावेश होता है और अुनमें मनुष्यको संस्कारी और ज्ञानी बनानेकी कितनी ताकत है यह सवाल अभी छोड़ दें, तो भी निश्चित रूपमें तुम्हारी यह कल्पना जान पड़ती है कि वर्तमान शिक्षाके कारण पिछली अनेक पीढ़ियोंकी स्त्रियोंसे तुम अधिक बुद्धिशाली, चतुर और ज्ञान-सम्पन्न हो और पुराने ज़मानेकी शिक्षा न पाअी हुअी सभी स्त्रियोंका तथा तुम्हारी माताओंका जीवन बड़े दुःखमें बीता होगा। यदि तुम सचमुच अैसा ही मानती हो, तो कहना चाहिये कि यह तुम्हारी भूल है। पढ़ाअीमें तुम्हारी बुद्धिमत्ता देखकर तुम्हारी माताको आनन्द होता हो, तो अिसका तुम यह अर्थ न करो कि अुन्हें अपने अपढ़ होनेका दुःख होता है। अुनके जमानेसे आजका जमाना भिन्न है और आजके जमानेमें शिक्षाके बिना तुम्हारी शादी होना मुश्किल है, अिस बातका अुन्हें हर वक्त खयाल रहता है। अिसलिअे संभव है ज्यों-ज्यों तुम परीक्षायें पास करती हो, त्यों-त्यों तुम्हारे विवाहकी कठिनाअी कम होनेका अुन्हें आनन्द होता हो। तुम्हारी मातायें या घरकी बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां तुम्हारे जितनी पढ़ी हुअी नहीं हैं, तो भी क्या वे तुमसे कभी कहती हैं कि अिस कारणसे वे दुःखी हैं? और कहती न हों तो भी क्या वे सचमुच दुःखी हैं? तुम अुनसे अेक बार पूछ तो देखो। जिस गृहक्षेत्रमें अुन्हें काम करना पड़ता है, क्या अुसमें अुनके अशिक्षित होनेके कारण अुन्हें कोअी कठिनाअी आती है? अुसमें जितना वे समझती हैं अुससे तुम पढ़ी-लिखी होनेके कारण क्या

ज्यादा समझती हो? पुरुष मेहनत करके रुपया लाता है। कितनी स्वतंत्र स्थितिमें वह कमाकर लाता है सो तो वही जाने। परन्तु जो कुछ लाता है सो सब अपनी पत्नीको सौंप देता है। अुस कमाअीमें से वह सारी गृह-व्यवस्था किफायतसे करती है। बाल-बच्चोंको और अन्य किसीको किसी तरहकी कमी नहीं होने देती। पुरुषको रुपया कमानेके सिवा और बातोंकी न तो कोअी चिन्ता करनी पड़ती है और न कुछ देखना पड़ता है। यह हालत सौमें से निन्यानवे घरोंमें मिलेगी। अिन घरोंमें अधिकारकी दृष्टिसे किसकी सत्ता दिखाअी देती है? हम कहते हैं कि स्त्रियां परतंत्र हैं, परन्तु घर-घर अुन्हींका जोर दिखाअी पड़ता है। अुनका अैसा जोर न होता, तो अिकट्ठे रहनेवाले कुटुम्ब स्त्रियोंके ही कारण विभक्त हुअे क्यों देखनेमें आते हैं? दो भाअियोंकी अलग होनेकी स्वाभाविक अिच्छा शायद ही कहीं पाअी जायेगी। परन्तु *स्त्रियोंके कारण भाअी-भाअी अलग हो जाते हैं।* घरमें स्त्रियोंका बोल-बाला न होता और स्त्रियां केवल परतंत्र ही होतीं, तो क्या अैसा हो सकता था? माना कि तुम्हारी मातायें या दूसरी स्त्रियां अशिक्षित थीं, अिसलिअे अुनके कारण घरके अिस तरह हिस्से हुअे। परन्तु तुम तो सुशिक्षित हो गअी हो। क्या अब अिन सब चीजोंसे बचनेकी तुममें बुद्धि या शक्ति है? शादी करनेके बाद पति और पतिके भाअी, देवरानी, *जिठानी आदि सबके साथ संयुक्त कुटुम्ब चलानेकी तुम्हारी तैयारी है?* मतलब, चाहे स्त्रियां अशिक्षित हों या सुशिक्षित, सबका यही खयाल है कि घरमें अुन्हींका प्राबल्य होना चाहिये। घरमें विवाह या किसी और महत्त्वके अवसर पर खर्चके बारेमें जब तुम्हारी मां और पिताके बीच मतभेद होता है, तब अन्तमें किसके मतानुसार बूतेसे अधिक खर्च होता है और वह कार्य पूरा किया जाता है? अिसका विचार करो और कुल मिलाकर *मत-प्राबल्यका अन्दाज लगाओ,* तो अुसमें भी तुम्हें *स्त्रियोंका* ही प्राबल्य दिखाअी देगा। अितना होने पर भी हम कहते हैं कि स्त्रियां स्वतंत्र नहीं हैं, अुन्हें कोअी पूछता नहीं है!

**संतोषपूर्वक कष्ट सहन किये बिना प्रेम व सुख नहीं मिलता**

अपने घरकी स्थितिका विचार करके देखो कि घरमें तुम्हारी मांकी चलती है या पिताकी। अधिकांश जगहों पर मांका ही जोर और अुसीकी सत्ता दिखाअी देगी। अिस जोर और सत्ताका अुपयोग वह कैसा करती है, यह दूसरी बात है। क्या तुम्हें यह विश्वास है कि जन्मभर गृह-संसार चलाकर तुमसे पहलेकी पीढ़ीकी स्त्रियोंने अपने-अपने पति और घरके दूसरे लोगोंका जो विश्वास, आत्मीय-भाव और प्रेम सम्पादन किया था, अुससे ज्यादा विश्वास, आत्मीय-भाव और प्रेम तुम सुशिक्षित स्त्रियां अपने पति और घरके दूसरे लोगोंका सम्पादन कर सकोगी? तुम्हारी दृष्टिसे अशिक्षित परन्तु वास्तवमें संस्कारी और सुस्वभावकी स्त्री अपने पति, सास-ससुर और घरके दूसरे लोगोंके लिअे मौका पड़ने पर जितना कष्ट और परेशानियां सहन करती है, अुतना कष्ट सहन करनेकी क्या सचमुच तुम्हारी तैयारी है? तुम्हारा विवाह नहीं हुआ है, अिसलिअे शायद अिस प्रश्नका जवाब देना तुम्हारे लिअे कठिन होगा। परन्तु आज जिस घरमें तुम छोटीसे बड़ी हुअी हो, जहां तुम्हारे माता-पिता अपनी शक्तिके अनुसार तुम्हें सुख देनेका प्रयत्न करते हैं, जिस घरमें तुम सब सुविधायें भोगकर सुखी रहती हो, अुस घरमें अवसर पड़ने पर अपने माता-पिताके लिअे, अपने भाअी-बहनोंके लिअे तुम संतोषपूर्वक कितना कष्ट सहन कर सकती हो, अिस परसे अपने भावी जीवनके बारेमें अंदाज लगाना तुम्हारे लिअे मुश्किल नहीं होगा। आज जो लोग तुम्हारी शिक्षाके लिअे स्वयं असुविधायें भोग रहे हैं, अुनके लिअे जरूरत पड़ने पर कष्ट सहन करनेकी अगर तुम्हारी तैयारी न हो, तो शादी होनेके बाद पतिके घरके अपरिचित मनुष्योंके लिअे तुम कष्ट सहनेको कैसे तैयार होगी? मैंने तुमसे कहा है कि तुम्हें खूब रुपया कमाने और अुसकी मददसे सुखी होनेकी अिच्छा है। अुसका आधार यही है कि तुम्हारे तमाम विचार किसी भी तरह रुपये आदमीको सुखी करते हैं। परन्तु तुमने अिसका विचार नहीं किया कि अिस शिक्षासे नौकरी पाकर तुम कितना रुपया कमा सकोगी

और अुस रुपयेसे कितना सुख पा सकोगी। तुम चाहती हो कि लोग तुम्हें सुख दें, परन्तु तुमने अिसका विचार नहीं किया कि लोग तुम्हें किसलिअे सुख दें। तुम्हारी मातायें स्वयं रुपया नहीं कमाती, परन्तु अुनके पतिका अुन पर पूरा विश्वास होता है। अैसी स्थितिमें तुम्हारे खयालसे अुनके सुखमें कौनसी न्यूनता है? परस्पर विश्वास, प्रेम, सहृदयता और हृदयकी कोमलतासे जो सुख मिलता है, वह क्या कभी रुपयेसे मिल सकता है? तुममें औरोंको सुख देने और प्रेम तथा कर्तव्यके खातिर कष्ट सहनेकी वृत्ति नहीं होगी, तो तुम्हारे लिअे प्रेमसे तकलीफ अुठानेको कौन तैयार होगा? तुम यह समझती हो कि शिक्षाके जोरसे हम पिछली पीढ़ीकी अपेक्षा ज्यादा स्वाधीन हो जायंगी। परन्तु तुम स्वाधीन होगी किस तरह? नौकरी और स्वाधीनता दोनों अेक-दूसरेके विरुद्ध हैं। फिर, स्वाधीन रहनेके लिअे जिस प्रकारकी मानसिक पात्रता और संस्कारिता होनी चाहिये, वह अिस शिक्षासे तुममें आ गअी है अैसी अगर तुम्हारी समझ हो, तो बहुत सम्भव है कि तुम धोखेमें हो। आजकलकी किताबी शिक्षा और संस्कारिता दोनों बिलकुल भिन्न चीजें हैं। सत्य, प्रामाणिकता, अुदारता, संयम, दया, सौजन्य, विवेक वगैरा मानव-सद्गुण ही संस्कारिताके सच्चे दर्शक हैं। और ये अपढ़ मनुष्यमें भी पाये जाते हैं, जब कि पढ़े-लिखोंमें अिनसे अुलटे दुर्गुण देखे जाते हैं। अिस प्रकार शिक्षा और सुसंस्कार अिन दोनोंका कोअी नित्य-सम्बन्ध नहीं है। तुम्हारी मातायें पढ़ी हुअी न हों, तो भी संस्कार-संपन्न हो सकती हैं। और तुम शिक्षा पाकर भी संस्कारहीन रह सकती हो। अैसी हालतमें तुम स्वाधीन किस तरह रह सकोगी? जिनके मनमें अनेक सुखोंकी लालसा भरी हो, अुनमें स्वाधीनता किस तरह कायम रह सकती है? तुम्हें शादी करनी है और शादी करके भी तुम्हें स्वाधीन रहना है। अर्थात् तुम्हारे पतिको सदा तुम्हारा गुलाम रहना चाहिये न? लेकिन अुसे तुम्हारे अधीन क्यों रहना चाहिये? क्या अिसीलिअे कि तुम शिक्षित हो और नौकरी करके रुपया कमाती हो? तुम कहोगी कि हम अेक-दूसरेसे प्रेम करके सुख प्राप्त करेंगे। परन्तु तुम्हें तो स्वतंत्रता चाहिये, सुख चाहिये; फिर तुम प्रेम किस तरह करोगी? प्रेम करनेवालेको दूसरेके लिअे त्याग करना पड़ता

करेगा? अिस मार्गसे तुम कभी सुखी न हो सकोगी। तुम्हें सुखी बनना हो तो जीवनका ध्येय अुच्च और अुदात्त रखो। केवल अभिलाषाके पीछे न दौड़ो। प्रेम चाहिये तो पहले प्रेम करना सीखो। प्रेम सीखना हो तो पहले क्षुद्र अहंकार छोड़कर दूसरेके लिअे कष्ट सहना सीखो। प्रेम करोगी तो प्रेम मिलेगा। विश्वास रखोगी तो दूसरेका विश्वास प्राप्त कर सकोगी। कष्ट सहन करोगी तो कोअी तुम्हारे लिअे कष्ट सहन करेगा। सुखका सम्बन्ध केवल शरीरके साथ ही नहीं है। मनकी अुच्च स्थितिके बिना सच्चा सुख प्राप्त होना संभव नहीं। रुपयेकी मददसे अेकाध कठिनाअी दूर हो सकती है, परन्तु सुख नहीं मिलेगा। औरोंको सुखी करके सुख पानेकी आकांक्षा रखोगी, तो किसी-न-किसी दिन तुम सुख पा सकोगी। केवल अपने ही सुखकी अिच्छा करती रहोगी, तो वह तुम्हारे हाथमें आने जितना सस्ता नहीं है। तुम्हारी माताने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, तब वह आज तुम्हारे पिताकी सारी कमाअीकी मालकिन बनकर बैठी है। तुम्हारे पिता पर अुसने संपूर्ण विश्वास रखा, अिसीलिअे आज वह तुम्हारे पिताके सम्पूर्ण विश्वासकी पात्र बनी हुअी है। अुसने तुम्हारे पिताके लिअे सब कुछ सहन किया, अिसीलिअे तुम्हारे पिता अुसके लिअे चाहे जो करनेको तैयार हैं। अुसने अपना अलग कुछ रखा ही नहीं, माना ही नहीं अिसी-लिअे आज घरमें जो कुछ है वह सब अुसीका हो गया है। सुसंस्कारी और धर्मनिष्ठ कुटुम्बमें सभी जगह यह स्थिति मिलेगी। तुम्हारी अिस शिक्षामें नौकरी करके पेट भरनेके अलावा और क्या ताकत है? अुस पर भरोसा रखकर तुम सद्गुणोंकी ओर दुर्लक्ष न करो, धर्मको न भूलो, मानवताको न छोड़ो। मानव-हृदयका मूल्य रुपयेसे निश्चय ही अधिक है। अिसलिअे रुपया कमानेके मोहमें पड़कर मानव-हृदय और प्रेमको न खो देना।

ये सारी बातें तुम्हें शादी होनेके बाद नहीं सीखनी हैं। आज जिस घरमें पहलेसे ही तुम पर प्रेम करनेवाले मनुष्य हैं अुसीमें सीखनी हैं। वहां न सीखोगी तो यह न मानना कि शादी होनेके बाद वे केवल स्वसुखलक्षी तुममें अेकदम आ जायंगी। आज जहां तुम्हें सब विचारके बोध ओरसे प्रेमका आश्रय है, वहीं तुम पहले अपने कर्तव्यके प्रति जाग्रत हो जाओ। तुम्हारी माताओं या

बड़ी-बूढ़ी स्त्रियोंको रात-दिन घरके कामोंमें मेहनत करनी पड़ती है, अिस परसे तुम अैसा समझती हो कि अुनका जीवन दुःखी है; और अिससे तुम्हें अुन पर दया आती है यह भी तुमने बताया। परन्तु तुम्हीं अपने मनमें सोचकर देखो कि वह दया कहां तक सच्ची है। मैं तुम सबके घरकी स्थिति तो नहीं जानता। परन्तु मुझे अितना पता है कि आजकल पढ़नेवाली कितनी ही लड़कियां अैसा मानती हैं कि वे पढ़कर मां-बाप पर बड़ा भारी अुपकार कर रही हैं। घरमें कितनी ही दिक्कतें हैं। अपने कामका बड़ा बोझ मांको सहन करना पड़ता है, यह जानते हुअे भी अुसके काममें मदद करनेकी अुनकी वृत्ति नहीं होती। तुम्हें सचमुच ही अपनी मां पर दया आती हो और अुसके प्रति सच्ची सहानुभूति हो, तो तुम कभी अुसके साथ अैसा बरताव नहीं करोगी। कमसे कम तुम अुसे अपने लिअे तो श्रम करनेकी नौबत न आने दोगी। अपने लिअे तुम अुसे परेशान न करोगी। परन्तु जिन लड़कियोंमें विद्यार्थी-अवस्थामें ही मांको मदद न देनेका अज्ञान, अहंकार और जड़ता हो, वे नौकरी करके दो पैसे कमाने लग जानेके बाद अुसके साथ या भाअी-बहनोंके साथ नौकरों जैसा बरताव करें तो अिसमें आश्चर्य नहीं। और जिन लड़कियोंकी जीवन-सम्बन्धी कल्पना, भावना और मनोवृत्ति केवल स्वसुख-लक्षी हो, वे घरमें अिससे भिन्न व्यवहार कैसे करेंगी? विवाह हो जानेके बाद पति और अुसके घरके अपरिचित लोगोंके साथ अुनका व्यवहार स्वार्थके सिवा और किस दृष्टिसे होगा? अिसलिअे यदि तुम्हें कर्तव्य-निष्ठ और धर्मनिष्ठ बनना हो और सबके साथ स्नेह और अुदारतासे रहना हो, तो आज जिस घरमें तुम हो, जिस परिवारमें रहती हो, वहींसे ये बातें शुरू करो। तुम सब स्वार्थी हो या अपने माता-पिताके लिअे तुममें दया-माया नहीं है या अपने भाअी-बहनोंके प्रति तुम्हें ममता नहीं है, यह कहनेके लिअे मेरे पास कोअी आधार नहीं है। परन्तु तुम्हारे निरे स्वसुख-लक्षी विचार, रुपयेसे सुखी होनेकी कल्पनायें, थोड़े पढ़े हुअे या बिलकुल अपढ़ लोगोंके प्रति तुम्हारे [illegible] और शिक्षित होनेके कारण अपने विषयमें तुम्हारे विलक्षण

अूंचे सवाल देखकर मेरे मनमें जो विचार आते हैं, अुन्हें मैं तुम्हारे सामने रख रहा हूं। साधारण लिखना-पढ़ना जाननेवाली स्त्रियां भी पतिके परदेश चले जाने पर घरका, घरकी खेतीबाड़ीका या और कोअी धंधा कितनी दक्षता और होशियारीसे चलाती हैं अिसके अुदाहरणोंका तुम्हें पता चले, तो मुझे विश्वास है कि मौजूदा शिक्षा-सम्बन्धी तुम्हारा अभिमान और थोड़ी या बिलकुल न पढ़ी हुअी स्त्रियोंके बारेमें तुम्हारी गलत धारणायें दूर हो जायेंगी।

**गृहस्थाश्रममें स्त्री-पुरुषका समान महत्त्व**

तुम सुखी होना चाहती हो, अिसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है। परन्तु तुम सुखका मार्ग नहीं जानती। तुम औरोंको सुख देनेमें कृपण रहकर और अपने लिअे दूसरोंको कष्ट देकर स्वातन्त्र्य और सुखकी अिच्छा करती हो। यही तुम्हारी भूल है। सुखकी अिच्छा तो प्राणीमात्रको होती है। परन्तु वह किस मार्गसे सुख प्राप्त करनेका प्रयत्न करता है, अिससे अुसकी परीक्षा हो जाती है। मनुष्यकी पात्रता अिस बातसे तय होती है कि अुस सुखमें केवल शारीरिक सुखका अंश कितना है और मानवीय श्रेष्ठ गुणोंका और धर्मका अंश कितना है। तुम्हारा यह कहना अेक हद तक सही है कि पुरुषोंके पास सारी सत्ता होनेसे स्त्रियोंको परतन्त्रता सहन करनी पड़ती है और अिसलिअे अुनकी प्रगति कभी तरहसे रुकती है। चूंकि नौकरीपेशा वर्गोंमें रुपया कमानेका काम बहुत समयसे पुरुष ही करते आये हैं और अिस वर्गमें स्त्रियोंके लिअे रुपया कमानेका साधन नहीं था, अिसलिअे पुरुषोंको अैसा महसूस होने लगा कि वे स्त्रियोंसे बढ़कर हैं। किसानों या दूसरे श्रमजीवी वर्गोंमें पुरुषोंके साथ स्त्रियां भी काम करती हैं, अिसलिअे अुन वर्गोंमें कमाअीके मामलेमें अितना भेद नहीं माना जाता। परन्तु नौकरी करनेवाले वर्गोंमें यह भेद अिस हद तक बढ़ गया कि पुरुष अपनेको कुटुम्बका सत्ताधीश मानने लगा। पुरुषोंकी मूर्खताके कारण कुछ बातोंमें अुनकी ओरसे स्त्रियों पर अन्याय भी होते रहे। परिणाम-स्वरूप स्त्रियोंको अैसा लगने लगा

पराधीन हैं। यह अुनके लिअे असह्य हो गया। और जब शिक्षाका मार्ग लड़कियोंके लिअे भी खुल गया और अुन्हें भी नौकरियां मिलने लगीं, तो अुनमें आत्म-विश्वास आने लगा और अुन्हें लगा कि हमें भी पुरुषोंकी तरह स्वतंत्र और सुखी होना चाहिये। परन्तु स्त्रियोंने अिन बातोंका शायद विचार नहीं किया कि पुरुष स्वतंत्र हैं यानी अुन्हें कौनसी स्वतंत्रता है? नौकरी करके अपना और अपने स्त्री-बच्चोंका गुजर करनेकी शक्ति होनेसे अुन्हें कौनसी स्वतंत्रता मिल गअी? नौकरको कितनी स्वतंत्रता हो सकती है? परन्तु तुम अवश्य अिसका विचार करो। स्त्रियोंमें अिस प्रकारकी भावना पुरुषोंकी मूर्खता और अहंकारके कारण पैदा हुअी है। परन्तु जिनमें कुलीनता है, जो विचारशील हैं, वे कभी अपनी स्त्रियोंको जरा भी हलकी नहीं समझते। वे अुनके साथ अिज्जतसे पेश आते हैं, घर-सम्बन्धी हरअेक बातमें अुनसे सलाह लेते हैं और यह समझते हैं कि सारा घर अुन्हींका है। खुद बेगार करते हैं और सारी कमाअी स्त्रियोंको सौंप देते हैं। संसारमें पुरुषों और स्त्रियोंका महत्त्व अेकसा ही है। कोअी किसीसे बढ़िया या घटिया नहीं है। दोनोंको मिलकर अपना संसार सुखी बनाना है। दोनोंको अेक-दूसरेकी मददसे अपनी अुन्नति करनी है। गृहस्थाश्रमके लिअे दोनोंकी ही समान जरूरत है। गृहस्थाश्रम मानव-अुन्नतिका बड़े महत्त्वका क्षेत्र है। अिस क्षेत्रको अधिकाधिक पवित्र बनाना दोनोंका काम है। दोनोंको अेक-दूसरेके सम्मानकी रक्षा करना और अुसे बढ़ाना है। संसारके सुख-दुःख, आनन्द-शोक, लाभ-हानि, मान-अपमान तथा प्रतिष्ठा, गौरव, भाग्य, यश, धर्म — अिन सबमें दोनोंका अेकसा हिस्सा है। घरकी सन्तानों पर दोनोंका समान अधिकार है। अपनी सन्ततिको ज्ञान, बल, विद्या और सब सद्‌गुणोंसे सम्पन्न करके दोनोंको अन्तमें अेक ही रास्ते, अेक ही गतिसे जाना है। गृहस्थ और गृहिणी — अिनमें कौन श्रेष्ठ और कौन कनिष्ठ? कौन स्वतंत्र और कौन परतंत्र? यह विवाद ही गलत है। परन्तु अेक यदि मूर्खतासे पेश आने लगे तो अुसके साथीको जन्मभर दुःख भोगना ही पड़ेगा और दुःखसे छूटनेके लिअे अुसे स्वातंत्र्य-प्राप्तिकी अिच्छा भी जरूर होगी।

परन्तु गहरा विचार करें तो समझदारीसे काम लेनेमें ही दोनोंका और सारी मानव-जातिका कल्याण है। कुछ भी हो, दोनों यदि अलग-अलग रास्ते जायेंगे तो काम नहीं चलेगा। प्रकृतिकी बनाओी हुआी अिस जोड़ीका — परमात्मा द्वारा खुद अपनेमें से निर्माण की हुआी अिन मूर्तियोंका — सौभाग्य, कल्याण और सार्थकता अिसीमें है कि दोनो अपना अपना अहंकार छोड़कर परस्पर अेकरूप हो जायं। भविष्यकी पीढ़ियों और सारे समाजका कल्याण भी अिसीमें है। अितने पर भी तुम घरकी गृहिणियां, घरकी स्वामिनियां बनना छोड़कर आजादी और सुखके लिअे अेक दफ्तरसे दूसरे दफ्तरमें नौकरियां ढूंढ़ने और करने लगो, तो अिससे तुम्हारा अपना, पुरुषवर्गका, तुम्हारी भावी संतानोंका और सारे समाजका क्या कल्याण होगा?

**जीवनके दो चित्र**

तुममें से कुछ लड़कियोंका यह प्रश्न है कि लड़कियां और स्त्रियां नृत्य सीखें या नहीं? सिनेमामें काम करें या नहीं? नृत्य सीखने और सिनेमामें काम करनेमें भी अुनका हेतु रुपया कमाना ही है। अिसलिअे रुपया कमानेके बारेमें मैंने अपनी जो राय अूपर बताअी है, वही अिस बारेमें भी तुम्हें समझनी चाहिये। तुम्हारे अिस प्रश्नसे अिस बातका स्पष्ट ज्ञान होता है कि रुपया कमाने, स्वतंत्र होने और सुख भोगनेके लिअे आजकलकी लड़कियों और स्त्रियोंके विचार कहां तक जा पहुचे हैं। लड़कियो! तुम्हारे अिन प्रश्नोंसे मालूम होता है कि सुख और स्वातंत्र्यकी अिच्छासे तुम भरमा गअी हो। अिससे मुझे आश्चर्य और दुःख होता है। सुख और स्वातंत्र्यके लिअे रुपया चाहिये और अुसे कमानेके लिअे सिनेमामें जाकर या पुरुषोंके सामने नाचकर अुनका मनोरंजन करनेकी ओर तुम्हारे मनका रुख देखकर मुझे तुम पर दया आती है। तुम्हें अितना ही मालूम है कि नृत्य करनेवाली और सिनेमामें काम करनेवाली लड़कियों और स्त्रियोंको रुपया मिलता है। परन्तु अुन्हें सुख मिलता है या नहीं, अुनका जीवन किस प्रकारका है और जीवनके अन्त तक अुन्हें [illegible]

तुम्हारे सामने दो चित्र हैं। अिनमें से कौनसा जीवन अनुकरणीय और आदरणीय है, अिसका निर्णय तुम खुद ही कर सकोगी।

अितना सुननेके बाद भी तुम्हें अैसा लगे कि आजके बदले हुअे समयके साथ अिस आदर्शका मेल नहीं बैठता, तुम्हारे गले यह न अुतरे और तुममें पुरुषार्थ, ज्ञान, सेवापरायणता और अपने सुखके प्रति अुदासीनता हो, तो घरके बाहर भी तुम्हारे लिअे जितना चाहिये अुतना विशाल कार्यक्षेत्र पड़ा है। जिस समाजमें तुम चलती-फिरती हो, अुसीमें आसपास जरा नजर डालकर देखो। स्त्रीवर्गमें कितना अज्ञान है, बच्चोंके पालन और शिक्षणकी ओर कितनी अुपेक्षा-वृत्ति है, अिसके बारेमें कितनी अड़चनें हैं; समाजमें स्वच्छता, सुघड़ता, व्यवस्थितता आदि अच्छे संस्कारोंका कितना अभाव है; परस्पर मेल, अैक्य, प्रेम, विश्वास, भावना, प्रामाणिकता, सहयोग और सेवाभावकी कितनी कमी है; आरोग्य और दूसरे शारीरिक गुणों और अनेक मानसिक सद्गुणोंका समाजमें कितना अभाव है, अिन सब बातों पर ध्यान दो। अिस स्थितिके लिअे अगर तुम्हें सचमुच दुःख हो, अिसे देखकर तुम्हारी अंतरात्मा व्याकुल हो, तो तुम अपनी शक्तिके अनुसार अिसमें से किसी अेक बातमें सुधार करनेका आजीवन व्रत ले लो और अुसके लिअे अपनी सारी शक्ति लगाती रहो। अैसा करनेसे तुम्हें केवल स्वसुखकी अपनी कल्पनामें जो धन्यता अनुभव होती है अुससे कहीं अधिक धन्यता तुम अनुभव करोगी; साथ ही हमारे समाजकी स्थिति भी सुधरेगी।

सामाजिक सेवाका आदर्श

(प्रवचन, १९४०)

२

# स्त्री-पुरुषके साधारण और विशेष गुण

[ अेक दम्पतीके साथ — अधिकतर पत्नीके साथ — हुआ सम्भाषण । ]

प्रश्न — आप हमेशा आग्रहपूर्वक कहते हैं कि मनुष्यकी अुन्नतिका आधार गुणोंके विकास पर ही है। यह बात मेरे गले अुतर गअी है। परन्तु गुणोंके विकासके लिअे किसी खास अनुकूल परिस्थितिकी जरूरत होती है। किसीकी अैसी परिस्थिति न हो तो वह अपनी अुन्नति कैसे करे?

अुत्तर — यह सही है कि कुछ गुणोंके विकासके लिअे अनुकूल परिस्थितिकी जरूरत होती है; परन्तु दूसरे कुछ गुणोंका विकास प्रतिकूल और विकट परिस्थितिके बिना नहीं हो सकता। मनुष्य यदि प्राप्त परिस्थितिका विचार करे और यह खोजकर कि अुस स्थितिमें किस तरहका बरताव विवेकयुक्त और सदाचारपूर्ण होगा अुसी प्रकार बरताव करनेकी कोशिश करे, तो अिसमें शंका नहीं कि वह कैसी भी परिस्थितिमें अपनी अुन्नति कर सकता है। परिस्थितिकी अनुकूलता या प्रतिकूलता सद्गुण-वृद्धिके परिणामसे तय करनी हो, तो जिस परिस्थितिमें सद्गुणोंकी जरूरत महसूस हो, जिसमें वे जाग्रत और वृद्धिगत हों, अुसी परिस्थितिको दरअसल अनुकूल परिस्थिति कहना चाहिये; फिर वह परिस्थिति हमें प्रिय लगे या अप्रिय, वांछनीय हो या अवांछनीय। परन्तु अुसी परिस्थितिमें विवेक और सदाचारसे व्यवहार करनेका निश्चय करके अुसके अनुसार हम चलते रहें और यदि अुसमें सद्गुण-सम्बन्धी हमारी पात्रता बढ़े, तो अप्रिय परिस्थिति भी हमारी अुन्नतिकी दृष्टिसे हमारे लिअे अनुकूल और हितकारक ही साबित होगी। अिसलिअे अप्रिय लगनेवाली और अूपर-अूपरसे देखने पर दु:खद लगनेवाली परिस्थितिको अपनी अुन्नतिकी दृष्टिसे अनुकूल बना

लेना हमारी विवेक-बुद्धि और सदाचार-सम्बन्धी निष्ठा पर निर्भर है। हमारे जीवनका हेतु पवित्र और शुभ हो, सद्गुण-सम्पन्न होकर मानव-जीवनको कृतार्थ करनेका ही अेकमात्र ध्येय हमने अपनाया हो, तो मेरे खयालसे हम कैसी भी परिस्थितिका सदुपयोग कर सकेंगे। विचारपूर्वक आचरण करें तो बाहरसे खराब दीखनेवाली परिस्थितिमें भी कुछ न कुछ अच्छा सिद्ध हो सकता है। 'अीश्वर जो कुछ करता है, हमारे भलेके लिअे ही करता है' अैसा जो हम कभी-कभी श्रद्धावान मनुष्योंको अपने सिर दुःख आ पड़ने पर कहते पाते हैं, अुसका यही अर्थ होगा।

मानव-जीवनमें अनेक प्रकारके सद्गुणोंकी आवश्यकता होती है। अुनमें से हरअेक सद्गुणकी आवश्यकता होनेके कारण अुसके जाग्रत होनेके लिअे अलग-अलग प्रिय-अप्रिय अन्तर्बाह्य प्रसंगों और परिस्थितियोंकी जरूरत होती है। क्योंकि किसी भी सद्गुणकी आवश्यकताका भान विचार-शील मनुष्यको किसी खास अवसर पर ही होता है; यह भान होनेके बाद अुस गुणकी जागृति होती है, और जागृतिके बाद अवसरकी कम-ज्यादा तीव्रताके अनुरूप अुस गुणके अनुसार आचरण होता है, और बादमें अुसकी वृद्धि — यह प्रत्येक गुणकी वृद्धिका क्रम है। अिसलिअे सभी गुणोंका अेक ही परिस्थितिमें जाग्रत होना और विकास पाना संभव नहीं है। प्रेम, मैत्री, अुदारता, वात्सल्य, दया अित्यादि गुण जैसे अेक खास परिस्थिति और मन:स्थितिमें जाग्रत होते हैं, वैसे ही सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता और न्याय-परायणता आदि गुणोंके जाग्रत होने और अुनके विकासके लिअे भिन्न परिस्थितिकी जरूरत होती है। और शौर्य, धैर्य, निर्भयता, सहनशीलता आदि सद्गुण दूसरी ही परिस्थितिमें निर्माण होते हैं। कुछ गुण दूसरों पर आये हुअे कठिन प्रसंगको देखकर जाग्रत होते हैं; तो कुछ अन्य गुणोंकी अुत्पत्ति हम पर आये हुअे कठिन प्रसंगोंसे होती है। कोमल भावनायें दूसरों पर आअी हुअी मुसीबतें देखकर पैदा होती हैं, जब कि वे गुण जिनके लिअे मनको दृढ़ और कठोर बनाना पड़ता है, अपने पर पड़नेवाले संकटके समय पैदा होते हैं। "मृदू मेणाहूनि आम्ही

कठिण वज्रास भेदूं अैसे ।।" (हम विष्णुके भक्त मोमसे भी नरम हैं और कठोर भी अितने हैं कि वज्रको भी छेद दें।) अैसा अेक संत-वचन है। "सज्जनोंके मन वज्रसे भी कठिन और फूलसे भी कोमल होते हैं" — यह सुभाषित भी प्रचलित है। अिससे यही साबित होता है कि सज्जनोंके चित्तमें अवसरके अनुसार गुणोंका आविर्भाव होता है। कोअी परिस्थिति मनकी कोमल भावनायें विकसित होनेके लिअे अनुकूल न हो, तो वह अुन गुणोंके पोषणके लिअे अुपयोगी हो सकती है, जिनके लिअे मनकी दृढ़ताकी जरूरत होती है। मनुष्य जब निर्धन हो जाता है, तब आम तौर पर अुसकी अुदारताका विकास नहीं होता; परन्तु अुसी अरसेमें वह अपनेमें सादगी, सहनशीलता, धीरज, निरालस्य, परिश्रमशीलता और किफायतशारी वगैरा गुण विवेकपूर्वक पैदा कर सकता है; निर्धनतामें मनुष्य कितना असहाय और लाचार बन जाता है, अिसका स्वानुभवपूर्ण बोध वह अिस परसे निकाल सकता है। अिससे मालूम होता है कि विचारवान मनुष्य किसी भी परिस्थितिमें सद्‌गुणोंकी और ज्ञानकी वृद्धि करके अपना हित साध लेता है। सद्‌गुणों और ज्ञानके विकासके लिअे कोअी भी समय प्रतिकूल नहीं होता। मुख्य बात अितनी ही है कि मनुष्यको अपनी अुन्नतिकी तीव्र अिच्छा होनी चाहिये और प्राप्त अवसर पर किस सद्‌गुणकी जरूरत है यह पहचाननेका विवेक होना चाहिये। अगर अुसमें यह तीव्र अिच्छा और विवेक न हो, तो सारा जीवन बीत जाने पर भी और अपने तथा दूसरों पर आनेवाले अच्छे-बुरे प्रसंगोंका प्रतिदिन अनुभव होने तथा अुन्हें देखते रहने पर भी वह अुन्नतिके लिअे योग्य और अनुकूल परिस्थितिको नहीं पहचान सकेगा और न वह अुसे कभी मिलेगी।

प्रश्न — अिन सब बातोंसे आपका कहना मैं अच्छी तरह समझ गया। विवेकशील मनुष्यको गुण-विकासके लिअे कोअी भी परिस्थिति अनुकूल प्रतीत होगी, अिसमें मुझे अब शंका नहीं रही। परन्तु मुझे समझाअिये कि स्त्रियों और पुरुषोंको अपनी-अपनी अुन्नतिके लिअे [illegible] गुणोंकी जरूरत है या भिन्न गुणोंकी?

अुत्तर — दोनोंको सभी मानव-सद्गुणोंकी ज़रूरत है। दोनों ही मनुष्य हैं। दोनोंका अपनी-अपनी दृष्टिसे पूरा विकास होना ज़रूरी है। फिर भी दोनोंके कार्यक्षेत्र अलग-अलग होनेसे अुनके कार्योंके अनुसार दोनोंके गुणोंमें थोड़ा-बहुत फ़र्क़ भी दिखाअी देगा। परन्तु यह कभी नहीं होता कि किसी गुणकी पुरुषको तो अपनी अुन्नतिके लिअे अत्यन्त ज़रूरत हो, लेकिन स्त्रीको अुसकी ज़रा भी ज़रूरत न हो, या अिससे अुलटा, किसी गुणकी स्त्रीको तो ज़रूरत हो, लेकिन पुरुषको बिलकुल न हो। मानव-जीवन अनेक गुणोंके आधार पर चल रहा है। जिस समय जिस गुणकी ज़रूरत हो, वह स्त्री या पुरुष किसीमें भी प्रकट होना चाहिये। तभी जीवनके कठिन प्रसंगों और कठिनाअियोंका निवारण होगा और मनुष्यकी अुन्नति हो सकेगी। सत्य, प्रामाणिकता वग़ैरा नैतिक गुण और करुणा, अुदारता वग़ैरा भावात्मक गुण स्त्री-पुरुष दोनोंमें अेकसे ही होने चाहिये। अितना ही नहीं, शौर्य, धैर्य, साहस आदि आम तौर पर पुरुषोंमें पाये जानेवाले गुण भी स्त्रियोंमें होने चाहिये; और वात्सल्य, बाल-संगोपन, शुश्रूषा-वृत्ति आदि ज़्यादातर स्त्रियोंमें दिखाअी देनेवाले गुण भी पुरुषोंमें होने चाहिये। स्त्रियों पर घरकी व्यवस्थाकी ज़िम्मेदारी होनेसे बाल-संगोपन और संवर्धन, गृह-व्यवस्था, खान-पान और आरोग्य वग़ैराकी देखभाल अुन्हें ही करनी पड़ती है, अतः अिसके लिअे आवश्यक गुण अुनमें विशेष मात्रामें होने चाहिये। अर्थ-सम्पादन और सबकी रक्षाकी ज़िम्मेदारी पुरुषोंके सिर होनेसे अिन गुणोंकी वृद्धि पुरुषोंमें होनी चाहिये। किसी खास अवसर पर अेकमें ही दोनोंके गुण ज़रूरी हो सकते हैं। बच्चोंकी छोटी आयुमें ही अुनकी माताकी मृत्यु हो जाय, तो पिताको बाहर कमाअी करके बच्चोंके पालन-पोषणका काम भी करना पड़ता है। अथवा पिताके मर जाने पर मांको ही कुछ न कुछ कमाअी करके बालकोंका भरण-पोषण और संगोपन करना पड़ता है। अैसे समय प्रत्येकमें दोनोंके विशेष गुण किसी हद तक प्रकट हुअे बिना बच्चोंका लालन-पालन, संगोपन और शिक्षण वग़ैरा संभव नहीं। यह तो किसी विशेष अवसरकी बात

परन्तु हमेशाके लिअे यह नियम ध्यानमें रखना चाहिये कि नैतिक और भाववर्धक गुणोंकी दोनोंको अेकसी जरूरत है। कार्य-विशेषके लिअे आवश्यक गुणोंके बारेमें दोनोंमें थोड़ी-बहुत भिन्नता हो, तो भी अिससे अुनकी अुन्नतिमें बाधा नहीं आयेगी। अितना ही होगा कि अेकका क्षेत्र संकुचित होनेसे कुछ गुणोंसे अुसका सम्बन्ध अुतनी मात्रामें कम रहेगा और दूसरेका क्षेत्र व्यापक होनेसे अुन गुणोंसे अुसका अुतनी मात्रामें अधिक सम्बन्ध रहेगा। परन्तु अिससे दोनोंकी अुन्नतिमें फर्क पड़नेका कोअी कारण नहीं।

प्रश्न — अितना होने पर भी अिनमें से विशेषतया किन गुणों और भावनाओंका पोषण करनेसे स्त्रियोंकी और किन गुणों और भावनाओंका पोषण करनेसे पुरुषोंकी अुन्नति हो सकेगी — अिसका कुछ स्पष्टीकरण किया जा सकता है? गुणोंमें भी स्त्री-सुलभ और पुरुष-सुलभ गुणोंका कोअी भेद तो होगा ही न?

अुत्तर — कुदरतने खुद ही दोनोंमें कुछ न कुछ भिन्नता रखी है, अिसलिअे अुनके कार्यों और तदनुसार गुणों और भावनाओंमें कुछ न कुछ भिन्नता और विशेषता होना स्वाभाविक है। माता बालकको जन्म देती है। गर्भसे लेकर जन्म तक अुसका पोषण वही करती है। जन्मके बाद भी बालक अुसी पर पूरा-पूरा अवलम्बित होता है। अुसका संगोपन, संवर्धन सब अुसीको करना पड़ता है। अुसकी शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक क्रियायें और व्यापार वह जानती है। बच्चा भी शरीर, बुद्धि, मन तीनोंके लिअे अुसीसे आवश्यक पोषण प्राप्त करता है। अिस प्रकार वे दोनों अेक-दूसरेके साथ सदा समरस रहते हैं। बालक यानी अेक ही चैतन्यमें से अुत्पन्न प्राण, मन और बुद्धिसे युक्त दूसरे आकारवाला चैतन्य। यह खोज करना कठिन है कि वे अेकमें से दो हुअे हैं या दोनों समरस होकर अेक बनते हैं। अेक ओर मातृप्रेमके और दूसरी ओर वात्सल्यके सम्बन्धसे वे अेक-दूसरेके साथ तादात्म्य प्राप्त किये होते हैं। स्त्रीके जीवनमें अुसके भाववर्धक गुणोंको अिस वात्सल्यसे ही विशेष गति मिलती है। वात्सल्यसे ही अुसकी -शक्ति विशेष जाग्रत और प्रकट होती है। दूसरे प्राणीके

लिअे स्वयं कष्ट सहनेका गुण और शक्ति वात्सल्यसे ही पैदा होती है। स्त्री पतिके लिअे कष्ट सहती है और पुत्रके लिअे भी सहती है। परन्तु अिन दोनों सम्बन्धोंमें कष्ट सहनेकी भावनामें बहुत अन्तर है। मातृत्वमें जो कोमलता, जो माधुर्य, जो पवित्रता और जो सरलता है, अुसका केवल पत्नीत्वमें पाया जाना कभी संभव नहीं मालूम होता। पत्नीधर्म और मातृधर्ममें बड़ा फर्क है। अेकमें सती होने तकके विलक्षण त्यागमें भी भयानकता, विवशता, असहायता और दासत्वकी भावना स्पष्ट दिखाअी देती है; जब कि दूसरेमें कोमलता, सरलता और स्वाभाविकता भरी हुअी दिखाअी देती है। वात्सल्यके द्वारा ही स्त्रियोंमें अपने आप गाम्भीर्य और स्थिरता आती है। वात्सल्यकी पूर्तिके लिअे अुन्हें अपनेमें दूसरे गुण लाने पड़ते हैं। अिस प्रकार अुनमें अिस अेक भावनाके कारण कअी अन्य गुणोंकी जागृति और विकास हो सकता है। वात्सल्यके कारण वे खुद प्रेमसे कष्ट सहना सीखती हैं, संयम रख सकती हैं। स्वयं कष्ट अुठाकर दूसरोंको सुख पहुंचानेकी वृत्ति अुनमें अिसीसे पैदा होती है। खुद खराब अन्न खाकर, समय पर भूखी रहकर भी बच्चेका पोषण करनेका भाव और गुण स्त्री अिसी वात्सल्यसे सीखती है। और यह सब सहकर भी वह कभी अिसका गर्व नहीं करती। निरहंकारी सेवा माता ही करना जानती है और कर सकती है। जिसके हृदयमें जीवनभर अिस तरहका वात्सल्य रह सकता है, अुसीको माता कहना अुचित होगा। बाकी स्त्रियां जन्म देनेवाली अर्थात् जननी भले ही कहलायें। जो अपने ही बच्चों या लड़के-लड़कियोंके बीच वात्सल्यके बारेमें भेद करती हैं या मानती हैं, कहना चाहिये कि अुनमें मातृत्वका विकास नहीं हुआ। अिसका अर्थ यही हो सकता है कि अिस प्रकार भेद करनेवाली स्त्रियोंने लड़के-लड़कियोंको जन्म देकर भी सेवा और निष्कामताका पाठ नहीं पढ़ा। जिनके प्रेममें आर्थिक या अन्य कोअी दृष्टि हो, अुनमें वात्सल्यका विकास संभव नहीं। जो अपने पेटसे जन्मी सन्तानोंमें ही भेद रखती है, अुनमें दूसरोंके बच्चोंके लिअे कहांसे पैदा होगा? अपने पेटसे पैदा हुआ लड़का हो या

अुत्तर — स्त्रियोंके संबंधमें कुदरतकी ही अैसी योजना है। अिसलिअे अुस योजनाको मुख्य समझकर अुसीके द्वारा अुन्नतिका विचार और अमल करना श्रेयस्कर होगा।

प्रश्न — लेकिन जिन स्त्रियोंकी अपनी संतान नहीं है, वे भी अुन्नत नजर आती हैं और अुनमें भी अनेक सद्‌गुण विकसित हुअे पाये जाते हैं। अैसा क्यों?

अुत्तर — अपनी संतानके द्वारा ही स्त्रीमें वात्सल्यकी जागृति होती है अैसी बात नहीं। हां, यह सही है कि कुटुम्बमें रहनेके बावजूद जिनमें यह भाव जरा भी जाग्रत न हुआ हो, अुनमें अपनी सन्तानके बिना यह भाव पैदा नहीं होगा। अेक प्रकारसे अिसे अुनकी जड़ अवस्था ही समझना चाहिये। समाजमें अैसी स्त्रियां बहुत थोड़ी मिलेंगी। जिस स्त्रीमें वात्सल्यके साथ दूसरे सद्‌गुणोंका पहलेसे ही विकास हो गया है, अुसे वात्सल्यके लिअे अपनी ही संतानकी जरूरत नहीं होती। परन्तु अैसी स्त्रीमें भी वात्सल्य ही अधिक व्यापक रूपमें और अन्य सारे सद्‌गुणोंसे प्रमुख रूपमें दिखाअी देगा।

प्रश्न — यानी किसी भी तरह अुसमें वात्सल्य विशेष रूपसे होना चाहिये, यही आपका कहना है न?

अुत्तर — हां। यही बात अधिक स्पष्टतासे कहूं तो तुम्हारे ध्यानमें आ जायगी। अैसा नहीं है कि प्रत्येक स्त्रीको अपने बालक द्वारा ही वात्सल्यका पाठ मिलता है। परिवारमें लड़कीको बचपनसे ही प्रेम और वात्सल्यका पाठ मिलता है। लड़की अपने छोटे भाअी-बहनोंको संभालने लगती है, तभीसे अुसमें अिस भावनाकी जागृति होती है। बड़ी बहनका छोटे भाअी या बहन पर जो प्रेम होता है, अुसमें भी वात्सल्यका ही अंश होता है। जिसे बचपनसे अिस तरहका प्रेम-संस्कार नहीं मिला अुसमें अपने बालकके सिवा वात्सल्य जाग्रत होना संभव ही अेक खास स्वरूप वात्सल्य है। जो बाह्य निमित्त कारण बनता है, अुस निमित्तसे ही हम अुसे

वात्सल्यकी अधिक आवश्यकता हो, असलमें माताका आकर्षण अुसीकी तरफ अधिक होना चाहिये। गड़रिया भी पंगु मेमनेकी ज्यादा संभाल रखता है। जिस किसानके घर गाय-भैंस होती है, वह भी कमजोर बछड़ेकी सबसे ज्यादा संभाल रखता है। अपने आश्रित पशुओंके लिअे भी अच्छे आदमीके दिलमें कोमल भावना होती है। तो फिर अपनेको श्रेष्ठ कहनेवाले मानवमें अितनी भी सद्‌भावना, अितना भी वात्सल्य अपने बालकोंके प्रति दिखाअी न दे तो अुसे क्या कहा जाय? अपने बच्चोंके प्रति रहनेवाले वात्सल्यसे ही दूसरोंके बच्चोंके प्रति वात्सल्य पैदा होता है। अिस वात्सल्यके द्वारा और अुसके लिअे जिन अन्य गुणोंका अवलंबन और अनुशीलन करना पड़ता है अुनके द्वारा ही स्त्रियोंकी स्वाभाविक अुन्नति होती है।

पुरुषोंके बारेमें विचार करनेसे अैसा लगता है कि घर चलानेके लिअे आवश्यक कमाअी करनेकी और अुस कमाअीकी तथा अुस पर आधार रखनेवालोंकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी अुन पर होती है। अतः अिसके लिअे जिन गुणोंकी जरूरत पड़ती है, अुन्हीं गुणोंके द्वारा अुनकी अुन्नति होती है। ये गुण अुनमें जिस मात्रामें विकसित हुअे होंगे, अुसी मात्रामें अुनकी कौटुम्बिक स्थिति अच्छी होगी। पुरुषोंमें भले सारे नैतिक गुण और भावनायें हों, लेकिन अगर अपना विशेष कर्तव्य पूरा करनेके लिअे आवश्यक गुण और शक्ति न हो तो काम न चलेगा। अिन गुणों और शक्तिमें ही अुनकी विशेषता है। प्रेम, वात्सल्य, सेवावृत्ति, निरालस्य, सादगी, संयम, किफायतशारी, अुचित अवसर पर अुदारता, परिश्रमशीलता, योजकता, आतिथ्य, कर्तव्य-निष्ठा वगैरा अनेक गुण, भाव और वृत्तियां स्त्री-पुरुष दोनोंमें होनी चाहिये। लेकिन अगर अिसमें भी विशेषता ढूंढ़नी हो, तो स्त्रीमें वात्सल्य और पुरुषमें बाहरी कमाअीकी योग्यता और संरक्षक-शक्तिके गुण विशेष मात्रामें होने चाहिये।

प्रश्न — तात्पर्य यह कि आपके मतानुसार वात्सल्यके बिना स्त्रियोंका विकास संभव नहीं।

अुत्तर — स्त्रियोंके संबंधमें कुदरतकी ही अैसी योजना है। जिसलिअे अुस योजनाको मुख्य समझकर अुसीके द्वारा अुन्नतिका विचार और प्रयत्न करना श्रेयस्कर होगा।

प्रश्न — लेकिन जिन स्त्रियोंकी अपनी संतान नहीं है, वे भी अुन्नत नजर आती हैं और अुनमें भी अनेक सद्गुण विकसित हुअे पाये जाते हैं। अैसा क्यों?

अुत्तर — अपनी सन्तानके द्वारा ही स्त्रीमें वात्सल्यकी जागृति होती है अैसी बात नहीं। हां, यह सही है कि कुटुम्बमें रहनेके बावजूद जिनमें यह भाव जरा भी जाग्रत न हुआ हो, अुनमें अपनी सन्तानके बिना यह भाव पैदा नहीं होगा। अेक प्रकारसे अिसे अुनकी जड़ अवस्था ही समझना चाहिये। समाजमें अैसी स्त्रियां बहुत थोडी मिलेंगी। जिस स्त्रीमें वात्सल्यके साथ दूसरे सद्गुणोंका पहलेसे ही विकास हो गया है, अुसे वात्सल्यके लिअे अपनी ही संतानकी जरूरत नहीं होती। परन्तु अैसी स्त्रीमें भी वात्सल्य ही अधिक व्यापक रूपमें और अन्य सारे सद्गुणोंसे प्रमुख रूपमें दिखाअी देगा।

प्रश्न — यानी किसी भी तरह अुसमें वात्सल्य विशेष रूपसे होना चाहिये, यही आपका कहना है न?

अुत्तर — हां। यही बात अधिक स्पष्टतासे कहूं तो तुम्हारे ध्यानमें आ जायगी। अैसा नहीं है कि प्रत्येक स्त्रीको अपने बालक द्वारा ही वात्सल्यका पाठ मिलता है। परिवारमें लड़कीको बचपनसे ही प्रेम और वात्सल्यका पाठ मिलता है। लड़की अपने छोटे भाअी-बहनोंको संभालने लगती है, तभीसे अुसमें अिस भावनाकी जागृति होती है। बड़ी बहनका छोटे भाअी या बहन पर जो प्रेम होता है, अुसमें भी वात्सल्यका ही अंश होता है। जिसे बचपनसे अिस तरहका प्रेम-संस्कार नहीं मिला होता, अुसमें अपने बालकके सिवा वात्सल्य जाग्रत होना संभव नहीं है। प्रेमका ही अेक खास स्वरूप वात्सल्य है। जो बाह्य निमित्त प्रेम जाग्रत होनेका कारण बनता है, अुस निमित्तसे ही हम अुसे अलग-अलग भावनाके

जानते हैं। मातृप्रेम, पितृप्रेम, बन्धु-भगिनी-प्रेम यद्यपि बाह्य निमित्त या सम्बन्धके कारण ही प्रेमके अलग-अलग प्रकार कहलाते हैं, तो भी अिन सबमें अेक ही प्रकारकी प्रेमवृत्ति है। मां, मौसी, फूफी, बड़ी बहन, चाची, मामी, दादी आदि सबका हम पर जो प्रेम होता है, अुसीका नाम वात्सल्य है। पिता, बड़े भाअी, काका, मामा, दादा आदिका भी हम पर वात्सल्य होता है। परन्तु वात्सल्य स्त्रियोंका विशेष गुण है। प्रेमके साथ जहां पूज्यताका भाव होता है, अुसे हम भक्ति कहते हैं। अीश्वर, माता-पिता, गुरु, सन्तजन अित्यादिके प्रति रहे प्रेमको पूज्यता या भक्तिभाव कहते हैं। असलमें अिन सबमें प्रेम ही मुख्य चीज है। अिस प्रकारका प्रेम छोटी लड़कीमें भी होता है। यही प्रेम छोटे भाअी-बहनोंके निमित्तसे जाग्रत होकर बढ़ने लगता है। यही अुसके वात्सल्यका अुद्भव है और यहींसे अुसकी वृद्धि होती है। अपने बालकके निमित्तसे अिसी वात्सल्यका सम्पूर्ण विकास करनेका अुसे अवसर मिलता है। अपनी संतानके अभावमें किसी स्त्रीको अैसा अवसर न मिला हो, तो भी वह अपने वात्सल्यका विकास भाअी-बहन, देवरानी-जेठानी वगैराके बच्चोंके निमित्तसे अथवा सगे-सम्बन्धियों या अड़ोसी-पड़ोसीके बालकों पर रहे प्रेमके निमित्तसे कर सकती है। परन्तु अिसके लिअे अुस मार्गसे अपनी अुन्नति करनेकी अुसकी अुत्कट अिच्छा होनी चाहिये। यह अिच्छा अुसमें न हो और अपनी संतान न होनेके कारण वह अपनेको अभागिन मानती हो, तो वात्सल्यकी दृष्टिसे अुसकी अुन्नतिकी कोअी गुंजाअिश और आशा नहीं रहती।

प्रश्न — परन्तु कअी स्त्रियोंका अिस बारेमें यह अनुभव है कि दूसरेके बच्चों पर किये गये प्रेमसे अन्तमें खुद अुन्हें कोअी लाभ नहीं होता। बच्चे अन्तमें मां-बापकी तरफ ही खिचते हैं और अुन्हींके हो जाते हैं। अतः अुनके लिअे की गअी सारी मेहनत बेकार जाती है।

अुत्तर — जिन्होंने अपने स्वार्थके लिअे दूसरोंके बच्चोंका पालन-पोषण किया होगा, अुन्हें जरूर अैसा लगेगा। परन्तु जिन्होंने अपने [illegible] लिअे और बच्चोंके कल्याणके लिअे परिश्रम किया होगा,

अुन्हें यह देखकर आनन्द ही होगा कि ये बालक हमारी दी हुअी शिक्षा और संस्कारोंके कारण अपने मां-बापको सुखी कर रहे हैं। हमने कुछ समय बच्चोंका पालन-पोषण किया, अुन्हें शिक्षा दी, संस्कार दिये, अिसी-लिअे वे अपने मा-बापको सदाके लिअे छोड़कर अुनकी मरजीके खिलाफ सदा हमारे पास रहें, अैसी अिच्छा कोअी सुशील स्त्री कभी नहीं करेगी। क्योंकि यह अिच्छा न्यायसंगत नहीं है। हमारे पास रहकर हमसे मिले हुअे संस्कारों द्वारा बच्चे मातृ-पितृ-भक्त हों, स्वधर्म-निष्ठ हों, यही अिच्छा बच्चोंका कल्याण चाहनेवाली किसी भी स्त्रीको रखनी चाहिये। अिसी प्रकार बच्चोंके कल्याणकी दृष्टिसे देखें, तो जिन्होंने अुनका थोड़े समय भी ममता या वात्सल्यसे प्रतिपालन करके अुन्हें अच्छी शिक्षा दी, अुनके प्रति अुन्हें (बच्चोंको) जीवनभर मातृभाव और कृतज्ञताका भाव रखना चाहिये। मौका पड़ने पर अुनके लिअे जरूरी परिश्रम करके अपने पर बरसाये हुअे वात्सल्य और अपने लिअे अुठाये गये परिश्रमके ऋणसे मुक्त होनेका प्रयत्न करना अिन बच्चोंको अपने जीवनका अेक अत्यन्त आवश्यक और पवित्र कर्तव्य मानना चाहिये। अपना पालन-पोषण करने-वालोंके प्रति भी अुनके मनमें अपने माता-पिताके जितना ही कर्तव्य-भाव जाग्रत रहना चाहिये। अेक ओर वात्सल्य और दूसरी ओर मातृभाव, अिस प्रकारके पवित्र भाव अेक-दूसरेमें हमेशा बने रहें, तो दोनोंकी सद्भावनाका अुत्कर्ष होगा और दोनोंकी अुन्नति होगी। अिसीलिअे दोनोंमें सद्भाव, कर्तव्य-निष्ठा और अुन्नतिकी दृष्टि होनी चाहिये। तभी यह संभव हो सकता है और दोनों पक्ष जीवनभर सन्तुष्ट रह सकते हैं।

जीवनकी दृष्टिसे वात्सल्यका कितना महत्त्व है, यह ध्यानमें रखकर स्त्रियां हमेशा देखती रहें कि अुसके द्वारा अुनका जीवन अधिकाधिक अुन्नत हो रहा है या नहीं। परमात्माका यह हेतु हो कि मनुष्य-जाति दुनियामें सदा बनी रहे या हम सबकी यह अिच्छा हो कि कुदरतके किसी अज्ञात या अतर्क्य धर्मसे निर्माण हुअे मनुष्य-प्राणीकी परम्परा कायम रहे, तो परमात्माका यह हेतु या हम सबकी वह अिच्छा पूरी

है परन्तु लोभ नहीं है, जिसमें सद्गुण होने पर भी अहंकार नहीं है, वह स्त्री दूसरी साधारण स्त्रियोंसे जरूर अधिक सौभाग्यशाली है। अुसके अिस वात्सल्यका, कर्तृत्वका और सद्गुणोंका अुत्तरोत्तर विकास होता रहे, तो किसीको जन्म देकर किसीकी जननी न बनने पर भी वह जगन्माता बननेके लायक होगी — अितने बड़े सौभाग्य और योग्यताको वह पहुंचेगी। क्योंकि वह मानव-धर्मके अेक महान गुणकी अुपासक है।

अगर अिस महान सद्गुणका महत्त्व हम जानते होते और अिसकी अुपासना हमारे समाजमें प्रचलित होती, तो पुरुषोंके और खास तौर पर स्त्रियोंके जीवनमें अिससे कितनी शोभा आ गअी होती? कितने बड़े-बड़े कुटुम्ब आज आनन्द और सुखका जीवन बिताते? तब क्या किसीने अपने या अपने भाअी-बहनों या देवरानी-जेठानीके बच्चोंमें भेद माना होता? वात्सल्य और प्रेमके बारेमें स्त्रियोंमें आज लगभग सर्वत्र दिखाअी देनेवाली दीनता, कृपणता और अनुदारता तब कहां नजर आती? भाअी-भाअीमें कलह, कुटुम्बमें फूट और आपसमें अनबन कहांसे होती? और तब हमारी मानवताको कलंक कहांसे लगता? हमारा कुटुम्ब हम तक और हमारी सन्तान तक ही सीमित है — अितनी संकुचित कल्पना हमने कैसे सन्तोष माना होता? हममें व्यापक रूपसे वात्सल्य निवास करता होता, तो जगह-जगह बिना मा-बापके अनाथ बच्चे हमें क्यों नजर आते? यह सारी दुरवस्था वात्सल्यके अभावके कारण है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको अिस स्थितिके लिअे ज्यादा दुःख होना चाहिये, क्योंकि यह सद्गुण अुनकी अुन्नतिका मुख्य आधार है। स्त्रियोंमें से मातृत्व निकाल दें, तो फिर बाकी क्या रह जाता है? और वात्सल्यके बिना मातृत्वका क्या कोअी अर्थ रह जाता है? यह वात्सल्य हममें है या नहीं, हमारे और दूसरोंके बालकोंका प्रतिपालन करनेसे अुनका और हमारा विकास होता है या नहीं, अिस तरफ अुन्हें ध्यान देना चाहिये। अुन्हें देखना चाहिये कि अुनके सहवाससे, अच्छे संस्कारोंसे बालक धर्मनिष्ठ बनते हैं या नहीं।

होनेके लिअे मानव-जातिमें जनन-धर्मकी अपेक्षा प्रतिपालन-धर्मका होना ज्यादा जरूरी है। और अिस प्रतिपालन-धर्मकी अुत्पत्ति और विकास वात्सल्यसे ही संभव है, यह बात हम सबको, खास तौर पर स्त्रियोंको, ध्यानमें रखनी चाहिये। सिर्फ मानव-जातिका ही नहीं, परन्तु पशु-पक्षी वगैरा प्राणियोंका अस्तित्व भी मुख्यत: अिस वात्सल्यके कारण ही टिका हुआ है। अिन बातोंको देखते हुअे मानव-जातिकी शाश्वतताके लिअे अत्यन्त आवश्यक अिस महान सद्भाव और गुणकी कीमत कभी कम न मानकर भरसक अुसका विकास करना चाहिये। केवल अपने पेटसे पैदा हुअे बालकका प्रतिपालन करनेसे अिस धर्मकी समाप्ति नहीं हो जाती। यह तो अुसका प्रारम्भ है। अितना-सा धर्म तो पशु-पक्षियोंमें भी अेक खास समय तक दिखाअी देता है। मनुष्य यदि अितनेसे ही अपनेको कृतकृत्य मान ले, तो अिसमें अुसकी क्या श्रेष्ठता है? अपने भाअी-बन्धुओं और बच्चोंके निमित्तसे पैदा हुअे अिस धर्मको जीवनभर अधिकाधिक व्यापक, अुदात्त और पवित्र बनाते रहनेमें ही मानव-जातिकी विशेषता है। स्त्रियों और पुरुषोंको अैसी हरअेक विशेषता सिद्ध करते-करते अपना जीवन सद्गुण-समृद्ध बनाना चाहिये। जिनके वात्सल्यकी मर्यादा अपने बच्चोंसे आगे नहीं जा सकती, अुनमें जीवन-विकासकी दृष्टिसे वात्सल्यकी अपेक्षा मोहका ही अंश अधिक होना चाहिये। परन्तु जो स्त्री दूसरेके पेटसे पैदा हुअी संतानोंका ममतासे पालन-पोषण करके, अुन्हें अच्छी शिक्षा और संस्कार देकर, किसी स्वार्थकी अभिलाषा रखे बिना अुनके माता-पिताको वापस सौंप देती हैं; अथवा जिनकी सम्हाल रखनेवाला कोअी नहीं है या जिनके माता-पिताका पता नहीं है अैसे निराश्रित बालकोंका पेटके बच्चेकी तरह निरपेक्ष भावसे पालन करके जो स्त्री अुन्हें बड़ा करती है, अुनके लिअे हर तरहका कष्ट और अवसर आने पर निन्दा और अपमान वगैरा भी सहन करती है, वह नि:सन्देह केवल अपने बच्चोंके लिअे कष्ट सहनेवाली अन्य किसी भी स्त्रीसे अधिक अुदार और श्रेष्ठ है। जिसके वात्सल्यमें व्यापकता है परन्तु मोह नहीं है, जिसमें कर्तृत्व

है परन्तु लोभ नहीं है, जिसमें सद्गुण होने पर भी अहंकार नहीं है, वह स्त्री दूसरी साधारण स्त्रियोंसे जरूर अधिक सौभाग्यशाली है। अुसके अिस वात्सल्यका, कर्तृत्वका और सद्गुणोंका अुत्तरोत्तर विकास होता रहे, तो किसीको जन्म देकर किसीकी जननी न बनने पर भी वह जगन्माता बननेके लायक होगी — अितने बड़े सौभाग्य और योग्यताको वह पहुँचेगी। क्योंकि वह मानव-धर्मके अेक महान गुणकी अुपासक है।

अगर अिस महान सद्गुणका महत्त्व हम जानते होते और अिसकी अुपासना हमारे समाजमें प्रचलित होती, तो पुरुषोंके और खास तौर पर स्त्रियोंके जीवनमें अिससे कितनी शोभा आ गअी होती? कितने बड़े-बड़े कुटुम्ब आज आनन्द और सुखका जीवन बिताते? तब क्या किसीने अपने या अपने भाअी-बहनों या देवरानी-जेठानीके बच्चोंमें भेद माना होता? वात्सल्य और प्रेमके बारेमें स्त्रियोंमें आज लगभग सर्वत्र दिखाअी देनेवाली दीनता, कृपणता और अनुदारता तब कहां नजर आती? भाअी-भाअीमें कलह, कुटुम्बमें फूट और आपसमें अनबन कहांसे होती? और तब हमारी मानवताको कलंक कहांसे लगता? हमारा कुटुम्ब हम तक और हमारी सन्तान तक ही सीमित है — अितनी संकुचित कल्पनासे हमने कैसे सन्तोष माना होता? हममें व्यापक रूपसे वात्सल्य निवास करता होता, तो जगह-जगह बिना मा-बापके अनाथ बच्चे हमें क्यों नजर आते? यह सारी दुरवस्था वात्सल्यके अभावके कारण है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको अिस स्थितिके लिअे ज्यादा दुःख होना चाहिये, क्योंकि यह सद्गुण अुनकी अुन्नतिका मुख्य आधार है। स्त्रियोंमें से मातृत्व निकाल दें, तो फिर बाकी क्या रह जाता है? और वात्सल्यके बिना मातृत्वका क्या कोअी अर्थ रह जाता है? यह वात्सल्य हममें है या नहीं, हमारे और दूसरोंके बालकोंका प्रतिपालन करनेसे अुनका और हमारा विकास होता है या नहीं, अिस तरफ अुन्हें ध्यान देना चाहिये। अुन्हें यह देखना चाहिये कि अुनके सहवाससे, अच्छे संस्कारोंसे बालक धर्मनिष्ठ बनते हैं या नहीं।

प्रश्न — अपने बालकोंके लिअे खूब कष्ट सहनेवाले माता-पिताकी भी बालक बड़े होने पर परवाह नहीं करते। अिसका क्या कारण होगा?

अुत्तर — लड़का हो या लड़की, अुसे सच्चे धर्मकी शिक्षा देकर हम धर्मनिष्ठ बनानेकी कोशिश नहीं करते, यही अिसका कारण होना चाहिये। मां-बाप बच्चों पर प्रेम करते हैं, वात्सल्यके कारण अुनके लिअे बहुत कष्ट सहते हैं और अुन्हें सुखी बनानेकी कोशिश करते हैं। सुख और सहवासके कारण जन्मसे ही बालकोंके मनमें माता-पिताके लिअे प्रेमभाव अुत्पन्न होता है। अुस समय कोअी किसीका वियोग सहन नहीं कर सकता। परन्तु बच्चे ज्यों-ज्यों स्वाधीन होते ह, त्यों-त्यों अुनके मनमें अलग-अलग सुखेच्छायें जाग्रत होती हैं। जब वे अिच्छायें मां-बाप पूरी नहीं कर पाते, तब अुनकी मनोवृत्ति अुस तरफ झुकती है, जहां अुनके खयालसे वे पूरी हो सकती हैं। अुसके परिणाम-स्वरूप मां-बापके प्रति अुनका पहलेका भाव कम होने लगता है। मां-बाप भी बच्चोंको केवल सुख पहुंचानेका प्रयत्न करते ह, अिसलिअे वे केवल सुखभोगी बन जाते हैं। मां-बापके प्रति अन्हें जो प्रेम होता है, वह भी केवल अपने सुखके लिअे ही होता है। जहां सुख मिले वहां ममता पैदा होनेकी सहज प्रवृत्ति बच्चोंमें बढ़ी हुअी होती है। अुसमें कर्तव्य या धर्मका अंश अकसर नहीं होता। कर्तव्यके लिअे कष्ट भी सहने चाहिये, दुःख हो तो भी कर्तव्य नहीं छोड़ना चाहिये, धर्मके सामने सुखकी परवाह नहीं करनी चाहिये, अधर्म या अन्याय न सहकर अुसके प्रतिकारके लिअे सब कुछ सहनेको तैयार रहना चाहिये; गरज यह कि हमें धर्मके लिअे ही जीना चाहिये और मौका पड़ने पर धर्मके लिअे मृत्युको भी आनन्दसे स्वीकार करना चाहिये — अिस प्रकारकी शिक्षा माता-पिता बच्चोंको कभी नहीं देते। बराबर सुख देते रहनेके कारण वे बच्चोंको केवल सुखभोगी बना देते हैं। अिस प्रकार सुखभोगी बनी हुअी सन्तान मां-बापकी तरफसे वांछित सुख मिलना बन्द हो जाने पर अगर अुस तरफ मुड़े जहां अुसे सुख मिलनेकी आशा हो और मां-बापको छोड़ दे तो अिसमें आश्चर्य क्या? बचपनमें

पूरी तरह मां-बापके अधीन रहे हुअे लड़के जवानीमें पत्नीके अधीन बनकर मां-बापका भाव तक नहीं पूछते, जिसका कारण अुनकी सुखलोलुपता और धर्मशिक्षाका अभाव ही मालूम होता है। बच्चोंको सुखकी अपेक्षा धर्म पर, कर्तव्य पर प्रेम करना सिखाया जाय, तो मेरे खयालसे अैसे दुःखदायी परिणामोंकी सम्भावना नहीं रहेगी। जिन्होंने अपने वात्सल्यके निमित्तसे अपने और बच्चोंके मोहकी वृद्धि न करके अुन्हें बचपनसे ही धर्मकी शिक्षा दी होगी, अुनके बच्चे बड़े होने पर भी मोहमें न पड़कर जीवनभर धर्ममार्ग पर ही चलेंगे। क्योंकि वे बचपनसे ही सीख लेते हैं कि जीवन धर्मके लिअे है; स्वयं दुःख, कष्ट और कठिनाअियां अुठाकर दूसरोंके दुःख, कष्ट और कठिनाअियां कम करनेके लिअे है, अिसीमें जीवनकी सार्थकता है। यदि माता-पिता वात्सल्य द्वारा बच्चोंको अिस तरहके संस्कार देते रहें, तो अुनके वात्सल्यका परिणाम बच्चोंमें धर्मके रूपमें प्रकट हुअे बिना नहीं रहेगा।

---